खण्ड 10 संख्या 25

बिहार विधान-सभा

(भाग-2—कार्यवाही प्रश्नोत्तर रहित)

शुक्रवार, तिथि 29 जुलाई, 1983 ।

विषय-सूची

	पृष्ठ
सभा-सचिव द्वारा विधान-परिषद् से प्राप्त संदेश पढ़ा जाना	1-2
विधान कार्य : अध्यादेश की अस्वीकृति सम्बन्धी संकल्प [प्रस्तुत नहीं किया गया]	2
सरकारी विधेयक : बिहार वन उपज (व्यापार-विनियमन) विधेयक, 1983 (प्रवर समिति को समर्पित)	2-3
बिहार विधान परिषद् में उद्भूत तथा उसके द्वारा यथापारित दंड प्रक्रिया संहिता (बिहार संशोधन) विधेयक, 1983 : (स्वीकृत) ।	3—9 9—11
प्रवर समिति के लिये सदस्यों का मनोनयन सम्बन्धी प्रस्ताव : (स्वीकृत) :	
बिहार विधान-परिषद् में उद्भूत तथा उसके द्वारा यथापारित बिहार सशस्त्र पुलिस विधेयक, 1983 : (स्वीकृत) :	11— 17
सामान्य लोकहित के विषय पर विमर्श : ईख उत्पादकों की समस्या : (समाप्त)	17— 37
शून्य-काल की चर्चाएं :	38— 42
(क) टी० ओ० पी० के प्रभारी द्वारा अत्याचार :	
(ख) मुंगेर जिलान्तर्गत विद्युत् संकट :	
(ग) तृतीय एवं चतुर्थवर्गीय कर्मचारियों की छंटनी :	

(उपाध्यक्ष महोदय ने आसन ग्रहण किया।)

सामान्य लोकहित के विषय पर विमर्श

राज्य में सुखाड़ से उत्पन्न स्थिति।

उपाध्यक्ष—सुखाड़ से उत्पन्न स्थिति के संबंध में विचार-विमर्श करने के लिए श्री लाल मुनी चौबे प्रस्ताव मूभ करेंगे।

श्री लाल मुनी चौबे—उपाध्यक्ष महोदय, मैं बिहार विधान-सभा की प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियमावली के नियम 43 के तहत यह प्रस्ताव करता हूं कि सुखाड़ पर बहस प्रारम्भ की जाय।

उपाध्यक्ष महोदय, दुर्भाग्य का दूसरा नाम बिहार है। वैसे बिहार दो भागों में विभाजित है, उत्तर बिहार और दक्षिण बिहार। उत्तर बिहार में अक्सर बाढ़ आती है और दक्षिण बिहार में अक्सर सूखा पड़ता है यानी उत्तर बिहार पानी-पानी होता रहता है और दक्षिण बिहार हमेशा बेपानी रहता है। वैसे सुखाड़ भारत की पुरातन समस्या है, पौराणिक काल से सुखाड़ के अनेक दास्तान हैं, इसकी विभिन्न गाथाएं हैं और दुर्भाग्य की बात है कि बिहार पौराणिक काल से सूखे से पीड़ित रहा है और उसमें सबसे ज्यादा बिहार का वह हिस्सा है जहां से डॉ० जगन्नाथ मिश्र आते हैं, जनक की भूमि। दूसरा अकाल पड़ा था महाभारत के समय जब युधिष्ठिर को विराट ने पासे के खेल में मारा था। तीसरा अकाल पड़ा था 1767 से लेकर 1773 तक आज के भागलपुर कमिश्नरी में जहां दो तिहाई लोग सूखे की चपेट में पड़ कर मृत्यु के मुंह में समा गये थे। इसका एक ऐतिहासिक महत्व है जिसे स्व० बंकिम चन्द्र चट्ठोपाध्याय ने रचना की और जहां रचना की वह स्थान आनन्दमठ कहलाता है जहां से स्वतंत्रता का शंख फूंका गया और उसमें से वन्दे मातरम की चर्चा आयी। मैं श्री रामाश्रय प्रसाद सिंह से आग्रह करता हूं, जो सरकार के एकमात्र प्रवक्ता हैं सदन में कि इस पुरातन समस्या की ओर ध्यान दें। आप गया से आते हैं, दक्षिण बिहार से और गया ऐसा स्थान है जहां भारत के कोने-कोने से लोग श्राद्ध कर्म करने के लिये आते हैं अपने पितरों को त्राण देने के लिये आते हैं। तो जिन्दा लोगों को वे आश्रय दें, दक्षिणी बिहार को सिंचित करें और न केवल इस इलाके को बल्कि कर्मनाशा नदी से लेकर बराकर नदी तक के हिस्से को चाहे वह छोटानागपुर का इलाका हो, हजारीबाग का इलाका हो, पलामू का इलाका हो या नवादा, भभुआ, रोहतास, चैनपुर, दुर्गावती या उत्तर बिहार का सीतामढ़ी, समस्तीपुर हो जो सूखे की चपेट में रहता है और वहां के लोग भूख से मरते हैं। वहां के लोग

हर 2-3 साल बाद बड़ी संख्या में बेघर हो जाते हैं। आजोविका के लिये दूसरे प्रदेशों में बिहार के लोग जाते हैं। तब वहां के लोग कहते हैं कि बिहार के लोग शताब्दियों से भूखे रहते आये हैं, बिहार सरकार के पास पैसा नहीं है, गल्ला नहीं है यहां के लोगों को खिलानें के लिये इसलिये बिहार के लोग कोने-कोने में बेघर होकर भीख मांगते हैं। इसलिये में सरकार से ऐसे समय में आग्रह करता हूं जब समूचो चोज सूख गयी, भदई फसल मारो गयी है, इधर 2-3 दिनों से पानी पड़ रहा है लेकिन वह पानी किस काम का, जैसा रामायण में लिखा है :

"का बरखा जब कृषि सुखाने, समय चूकि पुनि का पछताने।" इसलिये अब वर्षा का समय बीत चुका है, खेतों में धान के बिचड़े सूख गये हैं।

समय चुकने के बाद ही वर्षा होगी तो उससे क्या लाभहोगा ? जब खेत में बीचड़े सूख गए हैं, भदई की सफाई फलस गई है तब पानी होकर भी क्या करेगा। यदि अब वर्षा प्रारम्भ हो भी गई तब मैं समझता हुं कि 20 प्रतिशत से अधिक खरीफ की फसल नहीं हो सकती है। इनके अनेक कारण हैं। सुखाड़ से जहां बिजली संबंध रखती है, सुखाड़ से बीज का भाव संबंध रखता है, सुखाड़ से डीजल संबंध रखता है और जितनी खेती की समस्यायें हैं सुखाड़ से जुड़ी हुई है लेकिन सरकार की हालत क्या है। बिजली पर बहस इस सदन में हो चुका है। तमाम बिहार में इलेक्ट्रिक पोल, बिजली के पोल नंगे खूटे की तरह खड़े हैं। लोग पानी के बिना छटपटा रहे हैं। तमाम जगहों में जहां चापाकल लगे हुए हैं वे खूंटे का काम कर रहे हैं। उसमें लोग गाय-बैल बांध रहे हैं अधिकतर चापाकल मोर दैन 80 परसेंट खूंटे का काम कर रहे हैं जिसमें बैल बांधा जा रहा हैं। पेट नहर का फटा हुआ है, पेट नदी का फटा हुआ है उसमें पानी नहीं है और दक्षिण बिहार के पशु इसमें धूल चाट रहे हैं और धूल चाटने से उनकी जिन्दगी नहीं बच सकती है। खेतों में चारे नहीं पनप पाए हैं। पशु और आदमी समान रूप से परेशान हैं लेकिन सरकार इसकी तरफ ध्यान नहीं दे रही है। सरकार स्थायी समाधान ढूंढ़ने में, अभी की सरकार या पिछली सरकार असफल रही है। आज चाहे कांग्रेस पक्ष के लोग हों या विपक्ष के लोग हों इस सदन में इस समस्या का समाधान ढूंढ़े। रामाश्रय बाबू, अभी मुख्य मंत्री नहीं हैं। आप उनसे कहें आगे बढ़कर खुद कहें कि इसके समाधान की तरफ वे कदम उठायें। इसके लिए कदम क्या हो सकता है ? कदम हो सकता है भले ही पानी न पड़ा हो, धरती की ऊपरी सतह जल रही हो लेकिन बिहार की धरती के अन्दर जल का अपार स्रोत है। आप धरती का सीना फाड़कर, धरती की ऊपरी सतह पर उसको ला दीजिए तो बिहार भूखा

नहीं रहेगा। बिहार का आम आदमी, मजदूर जो पंजाब जीविका के लिए भाग रहा है वह बिहार के गांवों से नहीं भागेगा और बिहार को भिखारी नहीं कहा जायगा, और बिहार पूरे भारत में अपमानित नहीं होगा लेकिन आप जानते हैं बिहार केवल भारत में ही नहीं दुनिया में अपमानित हो चुका है। बिहार के लिए सारी दुनिया भीख मांगती है। बिहार के बड़े-बड़े नेता, भारत के बड़े-बड़े नेता दुनिया के बाजारों में भीख मांगते रहे हैं। दुनिया के छोटे-छोटे स्कूल के बच्चे बिहार को भूख से बचाने के लिए विदेशों में भीख मांग रहे हैं। दुनिया के हर कोने में उजागर हो गया था हम भीखमंगे हैं, भिखारी हैं। अमेरिका के गेहूँ और इंग्लैंड के अनुदान पर जी सकते हैं। जहां के बच्चे हमारे लिए भीख मांग रहे हों, जयप्रकाश नारायण जैसे विश्व ख्याति प्राप्त नेता हमारे लिए भीख मांग चुके हों इसीलिए हम आज खड़े हुए हैं कि इस सदन में तमाम लोग बिहार की प्रतिष्ठा को बचायें। जबकि इस धरती के अन्दर अपार श्रोत है, इसकी धरती उपजाऊ है, जहां खनिज से इतना पैसा आता हो जितना संपूर्ण भारत से आता हो उसका तीन चौथाई हिस्सा जमाने से यहां के मैटेरियल्स, खदानों से, कोयला से आता है। मैं समझता हूँ कि वह पैसा अगर हम रोक दें तो हम साधन सम्पन्न हो जायं और केन्द्रीय सरकार से उस पैसे का हिस्सा मांगे तो हम संपन्न हो जायं लेकिन हमारी सरकार उसको मांगने में असफल रही है चूंकि सिंचाई के लिए जो हमारे साधन मिले उसका दुरुपयोग हुआ।

उसे लूटा गया, उसे खा जाया गया, बड़े-बड़े महल बने, बड़ी-बड़ी कॉलनियां बनी, ओभरसीयर, मिनिस्टर और एम० एल० ए० बनी हुए। एक छोटे से तबके के अफसर, सिंचाई विभाग के जमींदार के रूप में खड़े हो गए। लेकिन सरकार का ध्यान नहीं गया, किसी सरकार का ध्यान नहीं गया। इरिगेशन ऐक्ट अंग्रेज के समय से जो लागू है वह आज तक लागू है। वह बंगाल इरिगेशन ऐक्ट कहलाता है। यह बहुत ही हास्यास्पद ऐक्ट है। मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि बंगाल इरिगेशन ऐक्ट क्या है? बंगाल इरिगेशन ऐक्ट कहता है कि जितना बांध पर खर्च होगा, खर्च लगेगा वह 16 साल में लाभ उठाने वालों से वसूल कर लिया जाएगा। दूसरी तरफ यह ऐक्ट किसानों के लिए कहता है कि बारहो महीने पानी देना होगा। लेकिन आज स्थिति क्या है? सिंचाई के बारे में काफी आंकड़े दिए गए हैं। 50 हजार हेक्टर, 35 हजार हेक्टर 44 हजार हेक्टर, 7 हजार हेक्टर, 9 हजार हेक्टर, दो हजार हेक्टर में सिंचाई हुई है। लेकिन मैं स्पेसिफिक उदाहरण देना चाहता हूँ कि रोहतास में एक कुहिरा डैम है जिससे 35 हजार एकड़ सिंचाई की बात है। लेकिन सिंचाई होती है सात हजार एकड़ जमीन

में। 28 हजार एकड़ लाभान्वित नहीं होती है जबकि ये 28 हजार एकड़ भी सिंचाई के लिए घोषित है। लेकिन इसके लिए कोई साधन नहीं है। वहां के किसानों को कोई बचा नहीं सकता है, सिंचाई नहीं दी जा सकती है उनके बच्चों को साधन नहीं दिया जा सकता है। आज उनकी कठिनाई को कोई देखने वाला नहीं है। दूसरी ओर बराबर उनसे कर वसूल किया जाता है। मैं कहना चाहता हूं कि यह बिहार-बंगाल इरिगेशन ऐक्ट कैसा हास्यास्पद ऐक्ट है कि 35 हजार एकड़ लाभान्वित घोषित हो और 7 हजार एकड़ जमीन में पानी दिया जाए। मिर्जापुर से तिलैया डैम तक बंगाल इरिगेशन ऐक्ट में है। लेकिन कहीं सिंचाई नहीं हुई है। मैं पूछना चाहता हूँ कि आखिर पैसा गया कहां? इस तरह का झूठा डाटा क्यों पेश किया गया? इस विभाग में लूट मची है। यह मेरा सोधा आरोप है। उपाध्यक्ष महोदय, शून्यकाल में एक सदस्य ने कुछ दिन पहले लूट की चर्चा की थी। वर्तमान इरिगेशन कमिश्नर, हमारे जिले के हैं, यह सौभाग्य की बात है। लेकिन दुर्भाग्य इस बात का है कि 13 लाख रुपया लगाकर कमिश्नर साहब अपनी निजी जमीन में पोद्दार गांव में पक्की नाली बनवा रहे हैं और वहां छावनी देकर बैठे हुए हैं। चार किलोमीटर में नहर का पटरो तैयार कर रहे हैं। 200 बीघे जमीन में पक्की नाली बनवाई जा रही है। जिसका लेवल चार फीट ऊंचा होगा।

श्री राजो सिंह—कमिश्नर का क्या नाम है?

श्री लाल मुनी चौबे—श्री कमला प्रसाद कमिश्नर हैं। वे 13 लाख रुपए का काम करवा रहे हैं और उस 13 लाख रुपए का एक भी चिट सरकार के पास नहीं है व्यक्तिगत चिट पर काम करा रहे हैं। यह मेरा आरोप है। जब मैंने एक सवाल सदन में ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के माध्यम से उठाया तो सरकार ने उसे माना। और उत्तर प्रदेश में मूसा डैम से 320 क्यूसेक पानी देने की बात है। लेकिन पानी नहीं दिया जाता है। सबसे पहला गांव जो पड़ता है उसको पानी दिया जाता है। लेकिन यहां नहीं दिया जाता है। आज होता क्या है? आज नहर भी राजनीति से प्रभावित हो रहा है। ऊपर के लोगों को पानी नहीं मिलता है और नीचे नहर खोदवा दिया जाता है। वैसे तो जीवन ही राजनीति से प्रभावित है। ऊपर के लोगों को पानी नहीं मिला, नीचे नहर खोदवा देते हैं और नीचे सुखाड़ से मौत होती रहती है। जब दोनों प्रदेश की सरकार तैयार है तो नहर क्यों नहीं खोदवाया जा रहा है। नहर नहीं खुदा, सरकार बदल गई, मंत्री बदल गए। मेरे ध्यानाकर्षण प्रस्ताव में सरकार ने मान लिया कि नहर खुदवा देंगे। कमिश्नर से जब मैंने पूछा कि

कितने दिनों में काम लगेगा तो उन्होंने कहा कि 6 दिनों में काम लग जायेगा। जब नहीं हुआ तो मैंने उनसे कहा तो उन्होंने कुछ अधिकारियों को बुलाकर कहा कि मैंने आदेश नहीं दिया था, मुझसे गलती हो गयी है। बाद में पता चला कि 1.3 लाख रुपया लेकर कमिश्नर साहब अपने खेत में सिंचाई की व्यवस्था करा रहे हैं और अधीक्षण अभियन्ता से ओमरसीयर तक वहां डटे हुए हैं जिसका एक भी चिट सरकार के पास नहीं है। उपाध्यक्ष महोदय, मैं दोनों तरफ के सदस्यों से आग्रह करना चाहता हूं कि सरकार ट्यूब-वेल की व्यवस्था करने से पानी नहीं मिलेगा। हैदराबाद से जो डायमन्ड ड्रिलिंग मशीन आयी है उसका उपयोग किया जाये तो दक्षिणी बिहार में धरती की सिंचाई होगी। अगर चाहे तो इसे सरकार करवा सकती है। अपने पाप का प्रायश्चित सरकार कर सकती है। अभी सदन में श्री लहटन चौधरी और श्री रामाश्रय प्रसाद सिंह, वरिष्ठ मंत्री हैं। वे डॉ० जगन्नाथ मिश्र से मिलकर मेरी उम्मीद है कि मेरी बातों को कहेंगे। मुख्य मंत्री अभी सदन में नहीं हैं। उनका फैसला रिजर्व है, हो सकता है वे पैरवी में लगे हुए हों, जबकि उन्हें आज सदन में इस गम्भीर प्रश्न के समय रहना चाहिए था। मैं कहूंगा कि चैनपुर, दुर्गावती, भगवानपुर, भभुआ, अधौरा, पलामू का पाटन ब्लौक आज सूखा है। लेकिन इस तरह का झूठा आंकड़ा देने से नहीं होगा। सम्पूर्ण बिहार को झूठा आंकड़ा देकर उलझा दिया गया है। कहीं सिंचाई नहीं हो रही है। लोग सूखे से छटपटा रहे हैं। सरकार इस पर ध्यान दें और सूखाग्रस्त इलाके के लिए कार्रवाई करे।

राजकीय आश्वासन समिति के प्रतिवेदन का उपस्थापन।

श्रीमती व्यूला दोजा—उपाध्यक्ष महोदय, मैं बिहार विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमावली के नियम 211 (1) के अन्तर्गत राजकीय आश्वासन समिति का 56वां प्रतिवेदन सदन की मेज पर रखती हूं।

सामान्य लोकहित के विषय पर विमर्श (क्रमशः)

राज्य में सुखाड़ से उत्पन्न स्थिति।

श्री मिथिलेश कुमार पाण्डेय—उपाध्यक्ष महोदय, सुखाड़ के सम्बन्ध में प्रत्येक वर्ष देखा जाता है कि कभी अतिवृष्टि हो जाती है तो दहाड़ हो जाता है और अनावृष्टि होती है तो सुखाड़ हो जाता है। इस तरह की परिस्थिति झेलने में किसान अभ्यस्त हो गये